Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ **Class:IV A 2025-26**

नाम:_____

सुप्रभात !

हम कक्षा चौथी 'अ' के विद्यार्थी है। आज हम आप सभी के समक्ष कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारी कविता का शीर्षक **'हिमालय'** है। यह एक संकलित कविता है।

पूरब से पश्चिम तक फैली, जिसकी पर्वतमाला है ।
यही हिमालय सारी उत्तर, सीमा का रखवाला है ।।

हिम का मुकुट शीश पर धरता, आसमान से है बातें करता ।
सूरज की स्वर्णिम किरणों में, इसका जगमग रूप निखरता ।।

कल-कल बहते निर्झर जल में, इसने अमृत डाला है ।
गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र का, यह मान बढ़ाने वाला है ।।

मानसून उठकर सागर से, हिमगिरि पर छाते बन बादल ।
रिमझिम-रिमझिम वर्षा होती, नदियों में बहता निर्मल जल ।।

शस्य श्यामला धरती में, सोना उपजाने वाला है ।
देवदार की है शीतल छाया, इसका रूप निराला है ।।

तीर्थधाम इसके आँगन में, अतुल संपदा औषध वन में ।
तपन-थकन सब हरने वाली, शीतलता है मंद पवन में ।।

ऋषि-मुनियों की तपोभूमि यह, वेदों को इसने पाला है।
सदियों से खड़ा सजग प्रहरी, सीमा का रखवाला है ।।

भारती का अर्थ वाणी है यह धरती के अर्थ में आया है।

धन्यवाद!

Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ **Class:IV B 2025-26**

नाम:_____

हम कक्षा 4 B के विद्यार्थी आप सभी के समक्ष एक कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं| इस कविता में चाँद अपनी व्यथा अपनी माँ को सुन रहा है| इसके कवि है- **रामधारी सिंह 'दिनकर'** और कविता का शीर्षक है- चाँद का कुर्ता |

चाँद का कुर्ता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन सन चलती हवा रात भर, जाड़े में मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्राबस, यात्रापूरी करता हूँ।

आसमान का सफर और यह, मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात, कहा माता ने अरे सलोने!
कुशल करे भगवान! लगे मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं, तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।

घटता बढ़ता रोज़ किसी दिन, ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को, दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही यह बता, नाप तेरा किस रोज लिवाएँ?
सी दें एक झिंगोला, जो हर रोज बदन में आए?

धन्यवाद!

Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ Class:IV C 2025-26

नाम:_____

सुप्रभात !

हम कक्षा चौथी 'स' के विद्यार्थी है। आज हम आप सभी के समक्ष कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारी कविता का शीर्षक 'आज तिरंगा फहराता है' है। इसके कवि 'सजीवन मयंक' है |

प्रस्तुत कविता में कवि ने देश के स्वाभिमान के प्रतीक तिरंगे की लहराने की महानता और देश के स्वतंत्रता संग्राम में सैनिकों के बलिदान का वर्णन किया है।तिरंगा हमारी शान है, हमें इसका सम्मान करना चाहिए।

आज तिरंगा फहराता है अपनी पूरी शान से। हमें मिली आजादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

आजादी के लिए हमारी लंबी चली लड़ाई थी। लाखों लोगों ने प्राणों से क़ीमत बड़ी चुकाईथी ॥

व्यापारी बनकर आए और छल से हम पर राज किया।

हमें आपस में लड़वाने की नीति अपनाई थी ॥

हमने अपना गौरव पाया, अपने स्वाभिमान से। हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से ॥

गांधी, तिलक, सुभाष, जवाहर का प्यारा यह देश है।

जियो और जीने दो का सबको देता संदेश है ॥

प्रहरी बनकर खड़ा हिमालय जिसके उत्तर द्वार पर।

हिंद महासागर दक्षिण में इसके लिए विशेष हैं ॥

लगीं गूंजने दसों दिशाएँ वीरों के यशगान से। हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से ॥

हमें हमारी मातृभूमि से इतना मिला दुलार है। उसके आँचल की छैयाँ से छोटा ये संसार है ॥

हम न कभी हिंसा के आगे अपना शीश झुकाएँगे।

सच पूछो तो पूरा विश्व हमारा ही परिवार है ॥

विश्वशांति की चली हवाएँ अपने हिंदुस्तान से। हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से ॥

धन्यवाद!

Daly College, Jr. School
हिन्दी सामूहिक कविता पाठ Class:IV D 2025-26

नाम:_____

सुप्रभात !
हम कक्षा चौथी 'द' के विद्यार्थी है। आज हम आप सभी के समक्ष कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारी कविता का शीर्षक 'कहती पुस्तक' है। यह एक संकलित कविता है। इस कविता में पुस्तकों की उपयोगिता के बारे में बताया गया है । मनुष्य ने सारा ज्ञान पुस्तकों से ही अर्जित किया है । ये पुस्तकें ही हमें आदर्श पथ पर चलना सिखाती हैं और हमारी संस्कृति और इतिहास से हमारी पहचान कराती हैं|

पुस्तक सबकी मित्र महान,

करती सारे काम आसान।

पुस्तक में ही हुए अवतरित,

वेद, बाइबल और कुरान।

नेक बनो तुम कहती पुस्तक।।

रखी अलमारी में जाती,

या बस्ते की शान बढ़ाती।

पर पन्नों के खुलते ही यह,

लेखक से है बात कराती।

मुझे पढ़ो तुम,कहती पुस्तक।।

दुनियाभर की सैर कराती,

ज्ञान और तकनीक सिखाती,

अंधकार से उज्जवल पथ की

पाठक को है राह दिखाती ।

समझ चलो तुम, कहती पुस्तक।।

संस्कृतियों का दर्पण पुस्तक,

इतिहासों का घर्षण पुस्तक,

भूत , भविष्यत्, वर्तमान के,

यह है सृजन का अर्पण पुस्तक।

ख्याल करो तुम, कहती पुस्तक।।

नेक बनो तुम, कहती पुस्तक।।

धन्यवाद!